अर्स अजीम के बाग जो, हौज जोए जानवर।
इत सक जरा न काहू में, मोहोलात या अन्दर।।५१ ।।

परमधाम के बगीचे, हौज कौसर तालाब, जमुनाजी या जानदर या अन्दर की मोहोलातों में अब जरा भी शक नहीं रह गया।

इन अर्सों की भी क्या कहूं, इन कुंजी अतन्त बूझ।
और बात इत कहां रही, काढ़्या हक के दिल का गुझ।।५२ ।।

तारतम ज्ञान ने जब श्री राजजी महाराज के दिल की गुझ बातें जाहिर कर दीं तो अब यहां बाकी क्या रह गया? इन अर्शों की भी क्या कहूं?

महामत कहे ए मोमिनों, ए ऐसी कुंजी इलम।
ए मेहेर देखो मेहेबूब की, तुमको पढ़ाए आप खसम।।५३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम वाणी ऐसी कुंजी है जिसके द्वारा श्री राजजी महाराज स्वयं अपने मोमिनों को परमधाम की पहचान करा रहे हैं।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। १०४२ ।।

सागर सातमा निसबत का

अब कहूं दरिया सातमा, जो निसबत भरपूर।
याको वार ना पार काहूं, जो नूर के नूर को नूर।।१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि रंग महल के ईशान कोने में यह सातवां सागर निसबत का है। यह श्री श्यामाजी महारानी की शोभा और निसबत का सागर है। इसका पारावार नहीं है। यह श्री राजजी महाराज के अंग श्री श्यामाजी और श्यामा महारानी के अंग रूहों का सागर है।

बेसुमार ल्याए सुमार में, ए जो करत हों मजकूर।
क्यों आवे बीच हिसाब के, जो हक अंग सदा हजूर।।२ ।।

यह श्री श्यामाजी महारानी श्री राजजी महाराज की अर्द्धांगिनी हैं और सदा एक रूप हैं और साथ रहती हैं। इनकी बेशुमार शोभा को शुमार में लाकर वर्णन करती हूं।

खूबी क्यों कहूं निसबत की, वास्ते निसबत खुली हकीकत।
तो पाई हक मारफत, जो थी हक निसबत।।३ ।।

अब श्री श्यामाजी के सम्बन्ध की खूबी का कैसे बयान करूं? इनके वास्ते ही हकीकत के भेद जागृत बुद्धि के ज्ञान से खुले, जिससे श्री राजजी महाराज के मारफत के ज्ञान की पहचान हुई।

निसबत असल सबन की, जित निसबत तित सब।
सब निसबत के वास्ते, इलमें जाहेर किए अब।।४ ।।

रूहों का सम्बन्ध श्री श्यामा महारानीजी से है और श्री श्यामाजी का सम्बन्ध श्री राजजी से है। अब जहां श्री श्यामाजी हैं वहां सब कुछ आ गया। जागृत बुद्धि के ज्ञान (तारतम ज्ञान) ने यह सारी हकीकत इनके वास्ते ही जाहिर की है।

Nijanand App

निसबत हक की जात है, निसबत में इस्क।
निसबत वास्ते इलम, इत आया बेसक।।५ ।।

श्री श्यामा महारानी श्री राजजी के अंग हैं और इश्क का स्वरूप हैं, इसलिए इन्हीं के वास्ते यह जागृत बुद्धि का ज्ञान आया है।

ए हकें किया इस्क सों, कई बंध बांधे जहूर।
सो जानत हैं निसबती, जो खिलवत हुई मजकूर।।६ ।।

मूल-मिलावे में श्री राजजी महाराज से इश्क का जो वार्तालाप हुआ था, उसे श्री श्यामा महारानी और सब रूहें जानती हैं। उनके वास्ते श्री राजजी महाराज ने कई युक्तियों से खेल दिखाया है।

हकें निसबत वास्ते, कई बंध बांधे माहें खेल।
सब सुख देने निसबत को, तीन बेर आए माहें लैल।।७ ।।

श्री राजजी महाराज अपनी श्यामाजी और रूहों को सुख देने के लिए तीन बार खेल में आए और कई युक्तियों के साथ लीलाएं कीं।

अव्वल देखाया लैल में, निसबत जान इस्क।
दूसरी बेर देखाइया, गुझ इस्क मुतलक।।८ ।।

पहली बार बृज में अपनी अंगनाओं (मोमिनों) को इश्क की लीला दिखाई, दूसरी बार रास में इश्क के विध-विध के भेद बताए।

वास्ते निसबत बेर तीसरी, खेल देखाया हक।
इलम बड़ाई इस्क, देख्या गुझ बका का बेसक।।९ ।।

श्री श्यामाजी महारानी और रूहों के वास्ते तीसरी बार जागनी के ब्रह्माण्ड में श्री राजजी महाराज ने अपनी जागृत बुद्धि के ज्ञान से और इश्क से अपने परमधाम के छिपे रहस्य बताकर सब संशय मिटाए।

निसबत वास्ते इस्क, निसबत वास्ते इलम।
खुसाली निसबत वास्ते, आखिर ल्याए खसम।।१० ।।

श्री श्यामाजी महारानी और रूहों के वास्ते ही श्री राजजी महाराज, इश्क, इलम और खुशहाली लाए हैं।

ए इलम अन्दर यों केहेत है, ए जो निसबत देखत दुख।
इन दुख में बका अर्स के, हैं हक दिल के कई सुख।।११ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी आत्मा को जागृत कर बताती है कि श्री श्यामा महारानी और रूहें जो दुःख देख रही हैं, उस दुःख में परमधाम और श्री राजजी महाराज के दिल के कई अखण्ड सुख छिपे हैं।

ए सुख सागर निसबत का, तिनका सुमार न आवे क्यांहें।
सब हकें मपाए सागर, पर निसबत तौल कोई नाहें।।१२ ।।

यह सातवां निसबत का सागर बेहद सुख देने वाला सागर है, जिसका कोई शुमार नहीं है। श्री राजजी महाराज के सब सागरों को मैंने तोला पर निसबत के सागर के समान कोई नहीं है।

Nijanand App

मापे गेहेरे सागर, जिनको थाह न देखे कोए।
तिन हक दिल अन्दर पैठ के, मापे इस्क सागर सोए।। १३ ।।

बड़े गहरे से गहरे सागर को नापा जिनकी किसी को थाह नहीं मिलती। श्री राजजी महाराज ने मेरे दिल के अन्दर बैठकर इश्क के द्वारा सब सागरों का नाप-तोल बता दिया।

जो हक काहूं न पाइया, ना किन सुनिया कान।
पाया न वाके अर्स को, जो कौन ठौर मकान।। १४ ।।

पारब्रह्म को किसी ने आज दिन तक न सुना था, न पाया था। न अखण्ड परमधाम का ज्ञान था कि वह कहां किस ठिकाने है।

सब बुजरकों ढूढ़्या, किन पाई न बका तरफ।
दुनियां चौदे तबक में, किन कह्या न एक हरफ।। १५ ।।

सब ज्ञानियों ने (अगुओं ने) ढूंढ़ा, परन्तु अखण्ड घर किस तरफ है, इतना भी नहीं जान सके, इसलिए चौदह तबक की दुनियां में किसी ने एक शब्द का भी बयान नहीं किया।

तिन हक दिल अन्दर पैठके, माप्या सागर इस्क।
इन हकके इलमें रोसनी, सब मापे सागर बेसक।। १६ ।।

अब जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम वाणी से और श्री राजजी महाराज के मेरे दिल में बैठ जाने से इश्क के सागर को मापा। और भी दूसरे सागरों को मापा।

सो इस्क इलम सुख सागर, वास्ते आए निसबत।
इन निसबत के तौल कोई, ल्याऊं कहां से हक न्यामत।। १७ ।।

यह इश्क और इलम के सुख के देने वाले सागर श्री श्यामाजी महारानी और रूहों के वास्ते ही आए हैं। अब श्री श्यामाजी महारानी और रूहों की बराबरी के लिए कहां से हक न्यामत लाएं।

ए निसबत जो सागर, जानें निसबती मोमिन।
कहूं थाह न गेहेरा सागर, कोई पावे न निसबत बिन।। १८ ।।

इस निसबत के सागर को रूहें ही जानती हैं। इसका रहस्य इतना गहरा है कि मोमिनों के बिना और कोई जान ही नहीं सकता।

तो क्यों कहूं जोड़ निसबत की, जो दीजे निसबत मान।
निसबत हक की जात हैं, जो हक वाहेदत सुभान।। १९ ।।

श्री श्यामाजी महारानी और मोमिनों जैसा कोई उपमा में ही नहीं है। यह श्री श्यामाजी महारानी और रूहें श्री राजजी के ही अंग हैं और उनकी एकदिली के स्वरूप हैं।

बोहोत लेहेरी इन सागर की, मेहेर इस्क इलम।
सोभा तेज सुख कई बका, इन निसबत में जात खसम।। २० ।।

इस निसबत सागर में इलम और इश्क की बहुत लहरें आती हैं। इनमें शोभा, तेज और कई तरह के अखण्ड सुख हैं। यह श्री राजजी महाराज के अंग हैं।

Nijanand App

एह इलम ए इस्क, और निसबत कही जो ए।
ए तीनों सिफत माहें मोमिनों, निसबत हककी जे।। २१ ।।

इलम, इश्क और निसबत जो कही है वह तीनों गुण मोमिनों में हैं, क्योंकि मोमिन श्री राजजी महाराज के अंग हैं।

किन पाया न इन इलम को, किन पाया ना ए इस्क।
तो क्यों पावे ए निसबत, पेहेलें सूरत न पाई हक।। २२ ।।

आज तक किसी ने पारब्रह्म के इश्क को नहीं पाया और न किसी ने इलम को पाया। न हक के स्वरूप की पहचान हुई, तो उन्हें यह कैसे पता चले कि मैं श्री राजजी महाराज की अंगना हूं।

ए गुझ भेद हक रूहन के, हक दिल की भी और।
ए जानें हक निसबती, जाको हक कदम तले ठौर।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज और रूहों के इश्क के छिपे रहस्य तथा और भी हक के दिल की बातें श्री राजजी महाराज के अंग मोमिन ही जानते हैं, जो श्री राजजी महाराज के चरणों तले बैठे हैं।

जब देखों हक निसबत, तब एकै हक निसबत।
और हकका हुकम, कछू ना हुकम बिना कित।। २४ ।।

जब श्री राजजी महाराज की निसबत को देखती हूं तो परमधाम में एक श्री श्यामाजी का ही स्वरूप नजर आता है। जब यहां खेल में देखती हूं तो सारी लीला श्री राजजी महाराज के हुकम की ही दिखाई देती है। हुकम के बिना कहीं कुछ भी नहीं है।

जो कोई हक के हुकम का, ताए जो इलम करे बेसक।
लेवे अपनी मेहेर में, तो नेक दीदार कबूं हक।। २५ ।।

इस खेल में मोमिनों ने हक के हुकम से जो तन धारण किए हैं यदि उन्हें जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान मिल जाए तो उनके सब संशय मिट जाएं। फिर श्री राजजी महाराज की मेहर से उनको श्री राजजी के दर्शन कभी-कभी हो सकते हैं।

पर कबूं दीदार ना निसबत का, ना काहूं को एह न्यामत।
ए जुबां इन निसबत की, कहा करसी सिफत।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज के दर्शन तो हो भी सकते हैं, परन्तु श्री श्यामाजी और रूहों के दर्शनों की न्यामत मिल ही नहीं सकती। इसलिए यहां की जबान से निसबत की महिमा कैसे बताएं?

ए जो सरूप निसबत के, काहूं न देवें देखाए।
बदले आप देखावत, प्यारी निसबत रखें छिपाए।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज अपनी निसबत के तन श्री श्यामाजी महारानी और रूहों को नहीं दिखाते, छिपाकर रखते हैं। आवश्यकता पड़ने पर स्वयं दर्शन देते हैं।

निमूना इन निसबत का, कोई नाहीं इन समान।
ज्यों निमूना दूसरा, दिया न जाए सुभान।। २८ ।।

जिस तरह से श्री राजजी का स्वरूप वर्णन करने के लिए कोई नमूना नहीं है, उसी तरह से श्री श्यामाजी और रूहों का कोई नमूना नहीं है।

Nijanand App

क्यों दीजे निमूना इनका, जो कही हककी जात।
निसबत इस्क इलम, ज्यों बिरिख फल फूल पात।। २९ ।।

जो श्री राजजी महाराज की अंगना कहलाती हैं तो इनका नमूना कहां से लाएं? जिस तरह से एक वृक्ष के डाली, फल, फूल और पत्तों का सम्बन्ध होता है, वैसे ही श्री राजजी महाराज के इश्क, इलम और निसबत का सम्बन्ध है।

सब लगे हैं निसबत को, इस्क इलम हुकम।
ना तो कैसे इत जाहेर होंए, हम तुम इस्क इलम।। ३० ।।

इश्क, इलम और हुकम सब निसबत से लगे हैं, नहीं तो रूहें श्री श्यामाजी, इश्क और इलम का इस संसार में पता कैसे लगता?

ए सब निसबत वास्ते, जो कछू सब्द उठत।
ए जो नजरों देखत, या जो कानों सुनत।। ३१ ।।

जो कुछ यहां बोलते हैं, देखते हैं या कानों से सुनते हैं, सब श्री श्यामाजी और रूहों के ही वास्ते है।

ज्यों हाथ पांउं सूरत के, मुख नेत्र नासिका कान।
त्यों सब मिल एक सूरत, यों वाहेदत अंग सुभान।। ३२ ।।

जिस तरह से एक तन के हाथ, पांव, शक्ल, मुख, नेत्र, नासिका, कान सब मिलकर एक तन कहलाते हैं, उसी तरह से श्री श्यामाजी, रूहें और श्री राजजी महाराज एक अंग हैं।

अब कहा कहूं निसबत की, दिया न निमूना जात।
और सब्द ना इन ऊपर, अब कहा कहूं मुख बात।। ३३ ।।

अब श्री श्यामाजी और रूहों का बयान कैसे करूं? कोई नमूना है ही नहीं और न और कोई शब्द ही है जो इस जबान से कहा जाए?

सिफत अलेखे निसबत, ज्यों सिफत अलेखे हक।
सब्दातीत न आवे सब्द में, मैं कही इन बुध माफक।। ३४ ।।

श्री श्यामाजी और रूहों की सिफत श्री राजजी महाराज की तरह बेशुमार है और शब्दातीत है। शब्दों में बयान नहीं हो सकती। मैंने जो कुछ कहा वह अपनी बुद्धि से कहा है।

कहिए सारी उमर लग, तो सिफत न आवे सुमार।
ए दरिया निसबत का, याकी लेहेरें अखंड अपार।। ३५ ।।

संसार में सारी उम्र तक निसबत का वर्णन करें तो भी वर्णन करना सम्भव नहीं है। इस सागर की लहरें अखण्ड और बेशुमार हैं।

ए बात बड़ी हक निसबत, सो झूठे खेल में नाहें।
ए बात होत बका मिने, हक खिलवत के माहें।। ३६ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग श्री श्यामा महारानी और मोमिनों की बड़ी भारी महिमा है। वह इस झूठे खेल में नहीं है। यह बात अखण्ड परमधाम में मूल-मिलावा के अन्दर ही सम्भव है।

Nijanand App

जो खेल में खबर ना हककी, तो निसबत खबर क्यों होए।
हक आसिक निसबत मासूक, वाहेदत में ना दोए।। ३७ ।।

खेल में किसी को पारब्रह्म की ही खबर नहीं है तो श्री श्यामाजी महारानी की कैसे हो सकती है? क्योंकि परमधाम में श्री राजश्यामाजी आशिक-माशूक की तरह एक हैं, दो नहीं।

ए बात सुने जो खेल में, बड़ा अचरज होवे तिन।
किन पाई ना तरफ हककी, ए तो हक मासूक वतन।। ३८ ।।

खेल में जो इस बात को सुनता है, उसे बड़ी हैरानी होती है, क्योंकि किसी ने आज दिन तक श्री राजजी के ठिकाने को नहीं जाना था। फिर परमधाम तो श्री राजजी, श्यामाजी और रूहों का घर है। इसे कौन, कैसे जाने?

तीन सूरत महंमद की, गुझ हकका जानें सोए।
हक जानें या निसबती, और कोई जानें जो दूसरा होए।। ३९ ।।

सिर्फ मुहम्मद की तीन सूरतें (बसरी, मलकी और हकी) ही श्री राजजी महाराज के छिपे रहस्यों को जानती हैं। इनके बिना कोई और है ही नहीं, तो कौन कैसे जाने?

वाहेदत की ए पेहेचान, अर्स दिल कह्या मोमिन।
मासूक कह्या महंमद को, जो अर्स में याके तन।। ४० ।।

वाहेदत की यही पहचान है कि श्री राजजी महाराज मोमिनों के दिल में अर्श करके बैठे हैं। उनकी परआत्मा परमधाम में होने से श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामाजी को माशूक कहा है।

महामत कहे ए मोमिनों, ए निसबत इस्क सागर।
ल्यो प्याले हक हुकमें, पिओ फूल भर भर।। ४१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह श्री श्यामाजी और रूहों के निसबत का सागर है। अब श्री राजजी महाराज के हुकम से इश्क के प्याले भर-भरकर पीओ।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। १०८३ ।।

सागर आठमा मेहेर का

और सागर जो मेहेर का, सो सोभा अति लेत।
लेहेरें आवें मेहेर सागर, खूबी सुख समेत।। १ ।।

रंग महल की पूरब की दिशा में सर्वरस सागर है। यही श्री राजजी महाराज की मेहर का निज स्वरूप है, जिसकी अपार शोभा, लहरें और सुख की खूबियां हैं।

हुकम मेहेर के हाथ में, जोस मेहेर के अंग।
इस्क आवे मेहेर से, बेसक इलम तिन संग।। २ ।।

हुकम श्री राजजी के मेहर के अधीन है। जोश श्री राजजी का अंग ही है। इश्क और जागृत बुद्धि धनी की मेहर से आती है।

Nijanand App